

रमा सत्रुला उनु क्वाहा भन्या पाउ माहाकाठा विद्या वनै काकां ठाले श्री कनु तसे सत्रु
कामुष सत्रु लउंनु ॥ २२ ॥ धन धान्य प्रयोगे पुतथा विद्या गमेषु च ॥ आहारे व्यवहारे च तप
क्रले ज्या सदा भवेत् ॥ अस्यार्थ ॥ धन धान्य को व्यवहार गदालि दादि दाले न्यान मानु
सिल महाप त्यापार विग्रह नस्कारणा फर्सा गरिहालनु ॥ २३ ॥ कुल मिल गुणोपेत सत्य ध
र्म यशस्य ॥ विप्र स्वये सलोद को धर्म हो विधियते ॥ अस्यार्थ ॥ राजा काद वार माहा द्वा
र पंडित ये स्तोत्र सुनु कस्तो भन्या वडा कुल को सिल वन्न गुण वन्न सत्य वादि धर्म को चर्चा
गत्या महा वष वातुर राम्रो ये स्तोप तिडतरा सुनु ॥ २४ ॥ इंगि जं वत तो जं व वल वा नृप

श्रीः यस्य मन्त्रम् ॥ अप्रमादिसदा ॥ ३५ ॥ अथ ॥ राजा नयस्तो दाम्या राघवकु
 लोभन्या ॥ अबुलरैमा हाया कुरो ॥ ३६ ॥ अथ ॥ राजा नयस्तो दाम्या राघवकु
 भयाको सदानम् तभया को यस्तो दुवा ॥ ३७ ॥ अथ ॥ मेधा विवापठ प्राज्ञ परविज्ञो राम
 पलक्षक ॥ धिरो यथा क्त्वादि न्वदुतयति विप्रते ॥ अस्यार्थ ॥ राजालेयस्तो उक्ति ॥ ३८ ॥
 दुल्या बुकु कस्तो भन्या ॥ वडो बुद्धि वत्तभया को दोलन लक्ष ल जानि वत्त धिय्य रहत्या ॥
 अर्का को मन को कुरो जां न्या ॥ जस्ता को तस्तो वेल न्या ॥ यस्तो उक्ति राघव ॥ ३९ ॥ आयु
 वेद क्त भास सर्वेषां पय दर्शण ॥ आर्य शिल गुरो पेत य सो वैद्य विधि यते ॥ अस्यार्थ

कहिले विस्वास तग न्या कामां कृत विस्वास तग तु क्त्वा हा भन्या ॥ विस्वास दे विभय डल
 तिहुं क्त्वा विस्वास फो रिदिया ता सहुं क्त्वा ॥ ४० ॥ अत से यो धि सेष अ व्या धि सेषं सथै वन
 धर्म ते हि पु नय स्मा त्तस्मा सेषं न धारयेत् ॥ अस्यार्थ ॥ अत को सेष ॥ अतिको सेष ॥ योग को
 सेष ॥ येती को सेष ॥ तराघनु क्त्वा हा भन्या ॥ सेष र ह्या वळर क्त्वा धौ सं नार ग्दुहुं क्त्वा ॥ ४१ ॥
 कोटि भार समर्थ नी किंदुर व्य वसायिता ॥ कोटि दे सस विद्या ता किं पर प्रिय वारि ना ॥
 अस्यार्थ ॥ बहु ते कार्य को भारा गत्या लाइ थोरै कार्य उता र्ग होहुं दैन लं य द्या मा नि
 सटा ला क्त्वा न जां भ दैन ते रै देष त्क ॥ विद्या वत्त पुरुष क्त्वा वद्य पर दे स ये के हुं क्त्वा मिठो

श्री सौवोलन्याकाशनुकोहिहं दैन ॥ ३७ ॥ श्रीलेशालेनमानिक्यमौक्तिकेनगजेग
 जे ॥ साधवोनाहिसर्वत्रचंदनेनवनेवने ॥ अस्यार्थ ॥ सर्वपर्वतमाहाहिरामानिकहुं सभ
 देनं सदैवतिकागाण्डस्थलमहागजमोतिहुं दैनं साधुभलामनुष्टुभं दैनं
 श्रीघण्टचंदनपनिनसर्ववतमाहाहं दैनं भलामनुष्टुभलेसोदिविद्विद्विगगर्तु
 ॥ ३८ ॥ यदि कासाश्रुतिप्रितित्रितनकारयत् ॥ धृतमर्षप्रयोगेवप्रदारंमधनं सदा
 अस्यार्थ ॥ भलामनुष्टुभलेसर्वकार्यप्रतिपुर्वगर्तुतिन्योक्कार्यनगर्तु कुनभना
 धृत्योर्नगर्तु जुवानयेलनु वेथधननआफलनु विरानिस्त्रिसंगगमननगर्तु

॥ ४० ॥ नास्तिविद्यासमो धंधु नास्तिव्याधिसमोरिपु ॥ नवापत्यासमो ह्मे होतवदैवात्परं व
 ल ॥ अस्यार्थ ॥ विद्यादेधिको मित्र अकेद्वैत रोगदेधिको शत्रु अकेद्वैत द्दोरारस्वास्तिदे
 धिकोप्राते अरुसंगद्वैत देवतादेधिवलियो अकेद्वैत ॥ ४१ ॥ तावत्सं सोभय नुरेवो लव
 सालजटावृता ॥ कोकिलश्रियथाकाकयावत्कंदा नभाषते ॥ अस्यार्थ ॥ सुर्षमनुष्टुभरजानि
 कतिको सुहा उंक्कभन्या हंसकामुष्ट्याजिको बकुलो कोइलीकामुष्ट्याजिको कागू जतिको सु
 हा उंक्क तत्ते ज्ञानिकामुष्ट्याजिपुर्षततिके सुहा उंक्क ॥ ४२ ॥ समुद्रवरणा भुमिभाय्यायां भरणं
 गृहं ॥ नरिन्द्राभरणादेशा वस्त्रभरणास्त्रिया ॥ अस्यार्थ ॥ पथिविकोगहहं नासामुद्रनदिहो

श्रीः घः को गहनासुपात्रस्त्रिहो देशा को गहना राजा हो खः लि को गहना वरि वरे ॥ ४४ ॥ कुं देशं
 वकुं वृत्तिं वकुं भाष्यं कुं नदितथा ॥ कुं पुत्रं वकुं भेष्यं वदः जयतपः लिङ्गं सदा ॥ ४५ ॥ सुपुत्र
 सले कुं देशा माहा वाशन गर्तु कुं वृत्ता को भोग न गर्तु कुं भाष्यं को सग्रह न गर्तु कुं नदिको स्त्रा राम
 नन गर्तु कुं पुत्र को भोर सा न रा वनु कुं शत्रु को भोजन न गर्तु भलाम नुष्य सं ॥ ४६ ॥ विद्वि संभार म १०
 तु ॥ ४७ ॥ भसा भक्त समं कृत्वा कार्या कार्य न तु ल्यता ॥ वाचा वाच्यं सदा ॥ ४८ ॥ व्याहित तो व
 धी ॥ ४९ ॥ अर्थ ॥ भलाम नुष्य ले यो वस्तु घातु यो वस्तु न घातु यो कार्यं गर्तु यो न गर्तु यो वस्तु
 वोल ॥ ५० ॥ यो त वोल नु यति कुरा वुडि मा नु म नुष्य ले विद्वि कार्यं गर्तु ॥ ५१ ॥ कनी क श्रोत्रिया

सः सः सः वः विः वः वः तः ॥ अर्थ ॥ यः हो ॥ गर्तु वंश गर्तु वेला माहा वात
 कः यो गर्तु ॥ ५२ ॥ यः लसित नु यति गुनः ॥ ५३ ॥ वाहसि वा ल्य सं
 ॥ ५४ ॥ सिधु वतन ॥ नाभि भक्त श्व सूर श्व घडय तान् वस्तु न ॥ अर्थ ॥ पाया
 ॥ ५५ ॥ न्या नपाया मा धार ले सं तो ॥ ५६ ॥ न्या ॥ सुत न्या वा ड उठ न ॥ ५७ ॥ मि
 ॥ ५८ ॥ सुते न ॥ ५९ ॥ उ न्या ये विद्वि गुन कु क्रक ॥ ६० ॥ अविश्रं ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥ वन विंदति ॥ असंतुष्टो भवेति तं गिनि सिद्ध वगर्द वत ॥ अर्थ ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥ ले दा गा हो न मा नु ॥ ६५ ॥ वाडो वाडो न मा नु ॥ ६६ ॥ कार्यं गर्तु पलो वस्तु वो

श्री कौटिल्यभयोभनिसंतोषनमानुयेति युतगधाहा कोलिन ॥ ५३ ॥ नरेन्द्रांमा तेतवाह
 एतप्रकोपयितइस्वरंतं समं क्रिडत क्रिडेभुजगंगमे ॥ अस्मार्थ ॥ भलामनुष्य लेराजा
 मातिपासु वाहनकोरिसन उठा उं बु देवता लेगया कोमपनिगरुन भव सपकोव राम
 रित्रनगर्तु भलामनुष्य लेयेति थोक कामगर्तु ग न्या होईत ॥ ५४ ॥ दुराधिता विघं १२
 विद्या अजिर्ण भोजनं विघं ॥ विघं गोष्टि दरिद्रस्य वृद्धस्य तरुणि विघं ॥ अस्मार्थ
 ताइक तनपया को विद्या विघे हो अजिर्ण भैया को अन्न विघे हो दारिद्रिक न
 रेष्टर विघे हो नू बुढा क ततरुणि स्वास्ति विघे हो ॥ ५५ ॥ विघं न भ्रम एत रात्रो

यति दुर्भिक्ष गोभीरभ्यागतो द्विज जिता धनवताना रिक्ता साधवता सभा ॥ अस्मार्थ ॥ क
 धिग न्यामनुष्य कन अनिकाल पदैत गाइपाल न्यामनुष्य कन भला मां क को अभ्यागत
 को अग्रयग नपा उं क घरमाहा धन भयार गृह माहा पुषि उं क भयास्त्रि वस्य वैर हं क धे
 क्लेसा भापनिजिती क ॥ ६१ ॥ दुर्भिक्ष कषिको जिवे सुखं नित्यं मयोगिता ॥ भार्या भृत्य वसायत्र
 नत्यो सर्व गृहे सदा ॥ अस्मार्थ ॥ दुर्भिक्ष पया माहा कामगर्तु मानिस जि उं क जस्को सरिर नि
 रोगि क सुधि भत्या को तेहि हो जस्की स्त्रि सेवक आफ ताव स माहा क तस्का घर माहा सदा हर्ष
 हं क ॥ ६२ ॥ दुर्भिक्ष प्राकृत सो धु दुर्भिक्ष मा प्रभु ॥ दुर्भिक्षा वत्सरा तीरि दुर्भिक्ष वत्त प्री यं ॥ अ

श्रीः स्वा० अर्थः ॥ ननु ध्यपनिदुःखमैहोः सेवकले विराया मासहन्या धानि पतिदुःखमैहोः सु
प्रत्यक्षं निपनिदुःखमैहोः नमस्तगरिवोर्लोक्या मनुष्यपनिदुःखमैहो येति थो ककन दुःखम रा म
अबु ॥ ६२ ॥ प्रतिले संभवेद्रव्यमनोविन्तेनय सुखा ॥ इति या परापिंडा भिका ॥ गध १४
मि ॥ अस्यार्थः ॥ भालाजानिमनुष्यलेयतिगर्तुः कतिभन्या वडले शलेधनतु ॥ उत म
नरे विताया को पुण्या को सुखगर्तुः आर्काको आत्मा पूर्ण गरिवा तदिदुयो भला मनुष्य
के रक्षणा हो ॥ ६३ ॥ पुत्रप्रयोजनाभायपूर्ण ॥ जत ॥ गतिप्रयो जना पिंडा सर्वमा
त्मा प्रयोजन ॥ अस्यार्थः ॥ भाय्या को पुत्रप्रयोजन ॥ जत ॥ पुत्रको प्रयोज